International Journal of Web of Multidisciplinary Studies
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
website: *https://ijwos.com* OPEN ACCESS E-ISSN : 3049-2424
Volume 3 Issue 4 , April 2026
DOI: https://doi.org/10.71366/ijwos03042625490

विवेकी राय के उपन्यासों में आंचलिक संस्कृति का अध्ययन

डॉ. वर्षा रानी, सहायक प्राध्यापक
शिक्षा संकाय, द .आई.सी.एफ.ए.आई.विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Article Info

Article History:

Published:19 April 2026

Publication Issue:
Volume 3, Issue 4
April-2026

Page Number:
195-199

Corresponding Author:
डॉ. वर्षा रानी

Abstract:

विवेकी राय आंचलिक कथाकार कहे जाते हैं। प्रदेश विशेष की संस्कृति अथवा जीवन के समग्र चित्रण को आंचलिकता के क्रम में रखा जाता है। लेखक परिवेश की सच्चाई को बड़ी बारीकी से समझते हैं चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा गरीबी, किसी भी तरह की समस्या हो सभी को नजदीक से चिंतन करते हैं । इनके उपन्यास बबूल, पुरुष पुराण, लोकऋण, श्वेतपत्र, सोनामाटी, समर शेष है, नमामि ग्रामम्, मंगल भवन, अमंगलहारी आदि हैं। उपन्यासों में कोई बनावटी संस्कृति नहीं है उन्होंने गांव के खेत–खलिहान, नदी-तालाब, गलियों में खेलने वाले बच्चों की अठखेलियाँ, किसानों के कार्यों, तीज- त्यौहारों, परम्पराओं को बिना हिचक दर्शाया गया है तथा ग्रामीण यथार्थता के साथ गाँवों के आतिथ्य सत्कार, व्यावहारिक जीवन को भी गर्व के साथ वर्णन किया गया है।

Keywords: आंचलिक संस्कृति, त्यौहार, परम्पराएँ, आतिथ्य सत्कार, खेत–खलिहान, व्यावहारिक जीवन, सोनामाटी, समर शेष है, बबूल, पुरुष पुराण, लोकऋण, सोनामाटी, समर शेष है, नमामि ग्रामम्, मंगल भवन, अमंगलहारी ।

1. प्रस्तावना

विवेकी राय का जन्म 19 नवम्बर सन् 1924 को उ.प्र.के बलिया जिले के भरौली ग्राम में हुआ था। अध्ययनशीलता के गुण जन्म से ही झलकते थे। प्रारम्भिक शिक्षा पैतृक गाँव सोनवानी (गाजीपुर) उत्तर प्रदेश में संपन्न हुई। प्रारंभ में कुछ समय खेती बारी के कार्यों को करने के बाद अध्ययन- अध्यापन के कार्य में संलग्न हो गये। एम.ए. हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी और पी-एच.डी. की उपाधि महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ से प्राप्त की। अपने ही गाँव की प्राथमिक शाला में अध्यापन कार्य किए। उनका व्यक्तित्व सादगीपूर्ण आकर्षक एवं गरिमा से अभिपूरित है। उनकी सभी उपन्यासों में गाँव के ही पात्र, समस्याएँ, सुझाव, परिस्थिति, लोक संस्कार, लोक-पर्व, लोकगीत, लोक-परम्पराएँ, सभी की छाँव उभर कर आ रही है ।

आंचलिक शब्द अंचल से बना है अंचल का अर्थ है नदी का छोर, किनारे की पृष्ठभूमि, साड़ी का किनारा। लेकिन उस शब्द से बना विषेषण कथा साहित्य में एक नये विषय को सुशोभित करता है। कथा साहित्य में आंचलिक का अर्थ है एक विशेष भूखण्ड जिसकी अपनी

Copyright © 2025 The Author(s) : This is an open access article under the CC BY license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)

संस्कृति है सीमित लोग उसे जानते हैं। उनकी अपनी रीति-रिवाज, खान-पान, भाषा, अपनी पहचान होती है। ग्रामीण संस्कृति को आंचलिक संस्कृति से भी संबोधित किया जाता है।

2. साहित्य समीक्षा

'बबूल' एवं 'लोकऋण' उपन्यास ग्रामीण समस्याओं की वास्तविकता को लेकर लिखे गए हैं। इनके उपन्यासों की विषय-वस्तु पूर्वांचल ग्राम जीवन की पुरानी घिसी-पिटी संस्कृति, परम्पराओं, नारी-पुरुष की मनोदशाओं, जमीदारों का किसानों के प्रति व्यवहार, राजनीतिक उथल-पुथल, ग्रामीण भूमि के प्राकृतिक दृश्य, प्रादेशिक बोली आदि से प्रेरित है। अतः स्पष्ट होता है कि उपन्यास अंचल विशेष की छाप लिये हुए हैं । उपन्यास में एक गरीब परिवार की दीन-हीन दशा का वर्णन है। 'दूर के ढोल सुहावन' इस उक्ति को लेकर उपन्यास में ग्रामीण गरीबी-अमीरी से संबंधित लोगों के स्वभाव को चित्रित किये हैं "ऊँचा दर्जा धोखा है सबको पेट की ही चिन्ता लगी है। किसी का पेट खाते-खाते बड़ा हो गया है। सबकी जाति एक है। पेट में अन्न जाने पर सब एक हो जाता है।"

'पुरुषपुराण' उपन्यास 'दूखन' कुम्हार की जीवन गाथा पर आधारित है जो अत्यंत कर्मठ पुरुष हैं वह बुढ़ापे में भी किसी के सहारे नहीं रहना चाहता है वह अपनी बहू को पुराने उसूलो और संस्कृति का पाठ पढ़ाने की कोशिश करता है जिस कारण घर में वैमनश्यता का वातावरण निर्मित होता है। यह उपन्यास भारतीय संस्कृति का तटस्थ उपन्यास है।

'लोकऋण' उपन्यास गिरते सांस्कृतिक मूल्यों एवं ग्रामीण परंपराओं को यथोचित बनाए रखने उनको अपने गांव की शोभा के समान समझना यही उपन्यास में वर्णन का विषय रहा है। भारतीय संस्कृति में व्याख्या की गयी है कि जनमानस जीवन में उनसे मुक्ति का प्रयास आजीवन करता है क्योंकि इनसे उऋण होने से ही मोक्ष संभव है। उपन्यास में अंचल की प्राकृतिक सुन्दरता का मनोहारी चित्रण देखने को मिलता है। पूर्वांचल की प्रादेषिक प्राकृतिक सुषमा अत्यंत मनोहर है तथा आंचलिक सुन्दरता सच्चे हृदयंगम भावों को सहेजा है। प्रकृति का मानवीकरण, उद्दीपन, अवलम्बन आदि आलंकारिक भाषा के साथ वर्णन किया है। उन्होनें प्रकृति वर्णन केवल उदात्त भाव से ही नहीं किया बल्कि प्रकृति के विनाशकारी, आपदा ग्रस्त प्राकृतिक प्रकोपों अतिवृष्टि, सूखा, अकाल आदि से जूझते गाँवों का वर्णन भी किया है।

'सोनामाटी' उपन्यास में लोक संस्कृति का बहुत सुनहरा वर्णन है। इन्होनें ग्रामीण गलियों में बिखरी संस्कृति को समेटने का प्रयास किया गया है। ग्रामीण मेले, त्यौहारों आदि का रोमांचक, मनमोहक चित्रण किया है। सभी त्यौहार बड़े ही उल्लास के साथ विधिवत मनाये जाते हैं, सभी ग्रामीण एक दूसरे के साथ मिलकर त्यौहार मनाते हैं । होली सबसे मुख्य त्यौहार माना जाता है | 'सोनामाटी' उपन्यास में प्रत्येक वर्ष मनायी जाने वाली होली त्यौहार का सुन्दर वर्णन मिलता है लोग फगुआ गीत के साथ आनन्दित होते हैं-

"ननदी का अंगना चननवा के गँछिया, ताहि चाढ़ि बोलेला काग।

देऊ तोहे कगवा दूधभात खोरवा,जो पिया आवहि आज।।"

मेले भारत में प्रसिद्ध हैं। पूर्वांचल में मेले को पर्व के रूप में लोग मनाते हैं। ये धार्मिक, सांस्कृतिक विकास के प्रतीक है। विवेकी राय आंचलिक उपन्यासकार कहे जाते हैं अंचल विशेष की संस्कृति को पल्लवित करने वाले उनके उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय है तथा यह ग्रामीण सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर लिखे गये हैं। ऐसे उपन्यासकार अत्यंत सरल होते हैं, जो वह भोगता है वही लिखता है।

'समर शेष' है उपन्यास में आजादी के बाद के गांवों की गरीबी पिछड़ेपन अशिक्षा का मार्मिक वर्णन किया गया है शिक्षा के निम्न स्तर भ्रष्टाचार एवं इनसे लड़ने वाले अध्यापक एवं अंधकार से निकलने को छटपटाता हुआ जनमानस का यथार्थ वर्णन किया गया है शिक्षा विकास की नींव होती है किंतु यहाँ पर शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार से जीवन स्तर गिरता हुआ दिख रहा है।

'नमामि ग्रामम' उपन्यास में आंचलिक संस्कृति को लेकर लेखक यर्थाथवादी दृष्टिकोण अपनाता है। गाँवों में पूजा- पाठ, व्रत, पर्व-त्यौहार, ब्राह्मण- भोज रीति-रिवाज, अतिथि सत्कार होता है लेकिन अब इन सब में गिरावट आ रही है। गाँव की संस्कृति में परिवर्तन हो रहा है जो पहले जैसे नहीं रह गया है। गाँव को देवता कहा जाता था लेकिन अब अनैतिकता का मंजर दिखाई देता है अच्छे लोग गाँव में नहीं रहना चाहते हैं। पहले अतिथि के आगमन से गाँवों में सौभाग्य की बात समझी जाती थी लेकिन अब स्थितियाँ अलग हैं। गाँवों में अकर्मण्यता बढ़ रही है जिससे संस्कृति में गिरावट आ रही है।

'मंगल भवन' उपन्यास पारिवारिक संबंधों के विघटन का जीता जागता उदाहरण है जिसमें उपन्यास के प्रमुख पात्र मेजर जगदीश अपने परिवार का अग्रज है जो अपने अनुज तुलसी से अथाह प्रेम करता है लेकिन पारिवारिक संपत्ति के बँटवारे को लेकर उन दोनों में लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। इस प्रकार के मूल्य विघटन के प्रमाण स्वाभाविक रूप से देखने को मिलते हैं। उपन्यास में लेखक ने एक नयी चेतना के साथ पुनर्जागरण के स्वप्नों को साकार होते देखा है तथा अतीत और वर्तमान के उद्वेलित संगम को अपनी लेखनी में गढ़ा है।

आंचलिक संस्कृति एवं परम्पराओं का विशद वर्णन मिलता है। भारतीय संस्कृति में विवाह को मन और आत्मा का पवित्र बंधन कहा गया है। विवाह के बाद जीवन को विकास की गति मिलती है लेकिन ग्रामीण समाज अनेक सामाजिक रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है जिनसे स्त्रियों का जीवन नारकीय हो जाता है। विशेष रूप से उच्च घराने की स्त्रियों को चाहारदीवारी में बंद कर दिया जाता है। भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को अर्धांगनी कहा गया है अर्थात् स्त्री पुरुष दोनों का इस जीवन में बराबर का महत्व है लेकिन यह एक अंग पर्दे के पीछे घुटता रहता है उपन्यास में इसका यथार्थ प्रस्तुत हुआ है "उनकी दुनिया घर की चाहारदीवारी के भीतर सीमित कर दी जाती है। ग्रामीण जीवन का एक अंग दुनिया से दूर अंधकार में सड़ा करता है गाँव की लड़कियों में भी शिक्षा प्रचार हुआ, पर विवाह के बाद गाँव में रहना पड़ा तो फिर उनकी वही अंधेरी दुनिया।" गाँवों में आज भी बाल विवाह, अनमेल विवाह और वृद्ध-विवाह मिलते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक प्रकार की बुराइयाँ समाज में पनपती हैं।

गाँव में शादी-ब्याह और मांगलिक कार्यों के अवसर पर गीत गाने का चलन है। इन्हीं लोक गीतों में भारतीय संस्कृति सुरक्षित मिलती है गीतों में स्त्री-पुरुष, लोटा-थाली, देवी-देवताओं को विषय के रूप में प्रयोग करते हैं। वर्तमान युग में पुराने आंचलिक गीतों का स्थान खड़ी भाषा के गीतों ने ले लिया है। इनके उपन्यासों में पारिवारिक रिश्तों की टूटन जमींदारों का वर्चस्व सांस्कृतिक विघटन देखाई देता है। ग्रामीण ग्रहस्थ जीवन के पुजारी, ग्रामीण धूम-धाम को वर्णित करते हैं उन्हें अपनी प्रसिद्धि और लोक प्रियता की चिंता नहीं थी। ग्रामीण संस्कृति की यथार्थता के साथ ग्रामीण परिवेश की गरीबी को उन्होंने बड़ी नजदीकी से देखा है। आस-पास के परिवेश को वे अपनी लेखनी का विषय बनाते हैं।

3. उपसंहार

भारतीय संस्कृति गाँवों में सुरक्षित हैं। ग्रामीण नाते-रिश्तों में सांस्कृतिक मूल्य अभी भी सुरक्षित हैं राय जी 'कल्पना और हिन्दी साहित्य' में लिखते हैं "भारतीय ग्राम अंचलों की सांस्कृतिक इकाइयों में मानवीय उच्च मूल्य अभी सुरक्षित है। भगवंती के प्रति ममता, छोटी भाभी के प्रति क्षोभ और मकान मालकिन के प्रति घृणा देख कर विवाहिता के प्रति शंका हो सकती है कि नैतिक दृष्टि से जब तीनों नारियाँ एक ही स्तर पर है तो ऐसा पक्षपात क्यों । " इस तरह विवेकी राय के उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति का यथार्थ प्रस्तुत हुआ है।

विवेकी राय का कथा साहित्य आँचलिकता का खुला दस्तावेज है। इनको घोर आँचलिक कथाकार कहा जाता है क्योंकि इनके उपन्यास, कहानी, निबंध आदि ग्रामांचल की सोंधी मीठी खुशबू की महक बिखेरती है। इनकी रचनाओं में आंचलिकता को अभिव्यक्त करने वाले सभी आयामों का वर्णन है। इनकी रचनाओं में लोकगीत, पर्व-त्यौहार, उत्सव, पूजा- पाठ का विस्तृत वर्णन और लोक भाषा का लहजा उभर उठता है। रेणु की भाँति ये भी आँचलिक वर्णन के लिए विख्यात तथा तीक्ष्ण कटाक्ष दृष्टि युक्त रहे हैं। इनको प्रेमचंद की ग्रामीण परंपरा से हम जोड़ सकते हैं। इनकी रचनाओं में संवेदनात्मक अनुभूति की प्रधानता के साथ अपनी रचनाओं में कला शिल्प की दीवार के अंदर रहने के साथ यथार्थवादी लक्ष्य के प्रति अपने संपूर्ण दृष्टि को उभारते हुए मुंशी प्रेमचंद की भाँति संवेदनशील लक्ष्य के पक्के हैं। इनकी रचनाएँ लोगों के भीतर आत्मविश्वास और साहस का संचार करती हैं और जीवन की चुनौतियों का डटकर सामना करने की शक्ति और प्रेरणा देती हैं। ग्रामीण संस्कृति के प्रति लोगों के बदलते विचार एवं सांस्कृतिक मूल्यों के पतन का मूल्यांकन कर संस्कृति के प्रति प्रेम और सम्मान जागृत करती हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

[1] राय, विवेकी, बबूल. वाराणसी: अनुराग प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1967.

[2] राय, विवेकी, बबूल. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1975.

[3] राय, विवेकी, श्वेतपत्र. वाराणसी: अभिरुचि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1976.

[4] राय, विवेकी, सोनामाटी. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1983.

[5] राय, विवेकी, समर शेष है. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1988.

[6] राय, विवेकी, मंगल भवन. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1994.

[7] राय, विवेकी, नमामि ग्रामम. दिल्ली: विद्या विहार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1997.

[8] राय, विवेकी, अमंगलहारी. दिल्ली: ज्ञान गंगा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2000.

[9] राय, विवेकी, लोकऋण, वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1977.

[10] राय, विवेकी, देहरी के पार. दिल्ली: ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण, 2003.

[11] श्याम सुंदर दास. हिन्दी शब्द सागर. काशी नागरी प्रचारिणी सभा, प्रथम संस्करण 1922.

[12] सत्यकाम. माटी की महक. दिल्ली: अभिरुचि प्रकाषन, 1994.

[13] मिश्र, रामदरश. हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2016.

[14] तिवारी, रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य साहित्य: विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.

[15] मिश्र, रामदरश, हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

[16] राय, विवेकी, आधुनिक हिन्दी उपन्यास: विविध विमर्श.

[17] आंजनेय, अनिलकुमार, डॉ. विवेकीरायः जीवन वृत्त और उपलब्धियाँ, अखिल भारतीय अंतर जनपदीय परिषद.